MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

# Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-32, Vol-05 Oct. to Dec. 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

26) मराठी संत ज्ञानेश्वर और नामदेव की सामाजिक भूमिका
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, जि.नांदेड ||117

27) जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में नारी
डॉ. रजनी शिखरे, जि.बीड, (महाराष्ट्र) ||121

28) आज के युग में पूर्वोत्तर के महामानव श्रीमंत शंकरदेव के काव्य की प्रासंगिकता
जैनेन्द्र चौहान, गौहाटी विश्वविद्यालय (असम) ||123

29) नरेश मेहता के काव्य में आधुनिकता बोध (संशय की एक रात के विशेष संदर्भ में)
संगीता कुमारी पासी, गुवाहाटी ||125

30) उत्तर प्रदेश में स्वरोजगार में सहायक मुद्रा योजना
डॉ. नरेन्द्र पाल सिंह & डा० लोकेन्द्र सिंह, बड़ौत (बागपत) उत्तर प्रदेश ||129

31) सार्वजनिक पुस्तकालय में सूचना संचार सेवा के आधुनिक माध्यमों द्वारा दी जाने ...
श्रीमती शालिनी बडेरिया, डॉ० राकेश कुमार खरे & डॉ० शैल श्रीवास्तव ||132

32) महर्षि भरद्वाज प्रणीत—बृहद् विमानशास्त्र में विमानों की जाति—प्रजाति तथा भेदोपभेद
शशि प्रकाश जायसवाल, लखनऊ ||139

33) महाभारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश : एक ऐतिहासिक अध्ययन
प्रियम्वदा, देवरिया (उत्तर प्रदेश) ||140

34) 'कौड़िया—सञ्चियां' कविता—संग्रह : मेरी नज़र स
राकेश कुमार शर्मा ||143

35) रक्षा नीति के आइने में झलकती सुरक्षा चिन्ताएं (स्वतन्त्रता से लेकर नब्बे के ...
डॉ० राकेश इस्टवाल, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) ||145

36) उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन में छात्रों की सहभागिता एक अध्ययन
डॉ. जगमोहन सिंह नेगी, चमोली ||152

37) वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता
डॉ० अनिल कुमार सिंह, अयोध्या ||160

38) मानव अधिकार : संकल्पना, स्वरूप व सद्यस्थिती एक अवलोकन
डॉ. इंद्रजित भाऊराव जाधव, जि. पुणे ||162



www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

27

# जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में नारी

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई, जि. बीड, (महाराष्ट्र)

ग़ज़ल काव्यविधा और उसकी लोकप्रियता भारतीय साहित्य में सर्वविदित है। उर्दू साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा ग़ज़ल ही है। उर्दू से भारतीय भाषाओं में आयी यह विधा हिंदी साहित्य में भी अपना स्थान निर्माण करने में सफल रही है। अमीर खुसरो ने अपनी ग़ज़लों में हिंदी भाषा का सटीक प्रयोग किया है। कबीर, भारतेंदु, 'निराला', त्रिलोचन, शमशेर बहादुरसिंह और दुष्यंतकुमार आदि ग़ज़लकारों ने हिंदी ग़ज़ल को दिशा देने का काम किया है। दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें तो भारतीय समाज में मुहावरों के रुप में स्थापित हो चुकी है। भारतीय राजनीति में आयी मोहभंग की परिस्थितियों ने साहित्यकारों को इस तरह प्रभावित किया की हिंदी साहित्य राजनीतिक भ्रष्टाचार विसंगतियों, कुरुपताओं एवं बर्बरता का यथार्थ रुप पाठकों के सामने लाने के लिए मजबूर हो गया। दुष्यंतकुमार ग़ज़ल के कारण ही हिंदी ग़ज़ल के सम्राट कहे जाने लगे। हिंदी साहित्य की परंपरा के अनुसार आम मनुष्य का दुःख, समस्या, उपेक्षित एवं शोषितों की मजबुरियाँ, स्त्री जीवन का सत्य उद्घाटित करने का काम हिंदी ग़ज़ल ने किया है।

समकालीन ग़ज़लकारों में दुष्यंतकुमार के बाद बहुत सारे ग़ज़लकार सामने आए है। उनमें जहीर कुरेशी का नाम बड़े आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। जहीर कुरेशी ने ग़ज़ल को नये मुहावरे और नये संस्कार देने का काम किया है। 'लेखनी के स्वप्न', 'एक टुकडा धूप', ' चाँदनी का दुःख', 'समंदर ब्याहने आया नहीं है' प्रकाशित हुए है। साथ ही आज भी उनका लेखनकार्य शुरु है। हिंदी ग़ज़ल में जो परंपरा चल रही है उसी का रुप जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में दिखाई देता है। "जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में हमें मानवीय जीवनमूल्यों का विघटन, महानगरीय जीवन की विद्रुपताएँ, नारी शोषण एवं अत्याचार, बेईमानी झूठ और फरेब, संपूर्ण देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, आतंकवाद और अलगाववाद की समस्या आम आदमी की पीड़ा, नैतिक मूल्यों का पतन आदि का बेबाक चित्रण परिलक्षित होता है।"१

साथ ही नारी जीवन की निराशा, अनास्था, घुटन, संत्रास, अकेलापन, आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक उपेक्षा, शोषण एवं अन्याय-अत्याचार आदि का यथार्थ चित्रण भी जहीर कुरेशी ने अपनी ग़ज़लों में किया है। उनके शेर विरहन की पीर के शेर नहीं हैं। दुष्यंतकुमार के समान ही आम जीवन की त्रासदी को अपने ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्ति देना उनका उद्देश्य रहा है। वे स्वयं लिखते है कि-

"किस्से नहीं है ये किसी विरहन की पीर के,
ये शेर हैं अंधेरों से लड़ते जहीर के।
मैं आम आदमी हूँ गुमनाम ही आदमी,
तुम काश देख पाते मेरे दिल को चिर के।"२

इस तरह जहीर कुरेशी स्वयं को आम आदमी ही मानते है। जो उन्हीं के समान संघर्षरत है। जो समाज में उजाला लाने की कोशिश में अंधेरे से लड़ रहे है। सामाजिक अंधकार को समाप्त करने की कोशिश जारी है। निर्बल एवं कमजोर लोगों पर जो अन्याय एवं अत्याचार इस समाज में हो रहा है, उसको समाप्त करने हेतु नारी, दलित, उपेक्षित आदि को ताकतवर बनने की सलाह जहीर अपनी ग़ज़लों के माध्यम से देते हैं। देखिए उनके शब्दों में-

"निर्बल कोई भी हो औरत, हरिजन अथवा शीशमहल
निर्बल पर ताकतवर ने हर युग में अत्याचार किया।"३

भारतीय संस्कृति ने स्त्री की पूजा की है। परंतु पुरुषप्रधान व्यवस्था निर्माण होने के बाद उसी देवी को दबाकर कुचलने का काम आज भारतीय समाज में दिखाई देता है। आज के इस दौर में स्त्री घर से लेकर शहरों तक असुरक्षित है। सामूहिक बलात्कार की विभिन्न घटनाएँ भारत में घटित हो रही है। इसकी सशक्त अभिव्यक्ति जहीर के शेर में दिखाई देती है-

"आज के इस दौर में भी क्या नहीं होता,
गाँव से लेकर शहर तक नारियों के साथ।"४

इतना सबकुछ होकर भी नारी इस व्यवस्था से हताश नहीं हैं। वह फिर भी अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित करती हुई दिखाई देती हैं। उसके स्वभाव, समर्पण, त्याग एवं सेवा का मूल्य हमें समझ में नहीं आता है। स्त्री को समझना, उसकी समस्या, घुटन एवं संत्रास को समाप्त करना आवश्यक है। इसलिए स्त्री जीवन का यथार्थ हमें समझना एवं उससे सीखना और समग्र मानव जीवन को स्वस्थ बनाना जरुरी है। जहीर का शेर दृष्टव्य है-



Scanned with CamScanner

"तुम समझना ही नहीं चाहते औरत का सुभाव,
वो पहेली नहीं औरत को समझकर देखों।"५

स्त्री अपना स्वयं का अस्तित्व खोकर दूसरों के लिए नवनिर्माण करने का काम करती हैं। हम अगर उसको प्रेम एवं समर्पण दे तो वह मनुष्य जीवन को स्वर्ग बनाती हैं। परंतु अगर उसके समर्पण, त्याग एवं प्रेम की उपेक्षा की गयी तो वह नरकमय जीवन भी बना सकती है। जहीर कुरेशी स्वयं की अनुभूति गज़ल में व्यक्त करते है कि-

"अपना अस्तित्व खोकर बनी
बूँद अब भी समंदर बनी।
मै भी उसके लिए घर बना
वो भी मेरे लिए घर बनी।"६

नारी जीवन की तकलीफ, अनास्था, अव्यवस्था एवं विसंगतियों ने श्रेष्ठ जीवनमूल्यों को समाप्त कर दिया है। स्त्री गरीबी एवं मजबूरी में बूरे कामों में फँस गयी है। पुरुषी वासना का शिकार स्त्री को होना पड़ता है। स्त्री को नृत्यांगना, वेश्या एवं गुलाम-दास बनाकर रखनेवाली इस समाज व्यवस्था का असली रुप जहीर कुरेशी की गज़लों में दिखाई देता है। स्त्री को अधिकार से वंचित कर उसको कर्तव्य निभाने के लिए मजबूर करनेवाली भारतीय व्यवस्था ने स्त्री को अपना शरीर बेचने पर मजबूर किया है। उसका चित्रण जहीर की गज़लों में देखिए-

"अँधियारा घिरते ही वो तन की दुकान सजाती है,
इसीलिए वो बाट जोहती है अँधियारा होने की।
और कब तलक मन के अन्दर पीड़ा रखकर मुस्कराएँ
कभी-कभी इच्छा होने लगती है, खुलकर रोने की।"७

इस तरह शाम होते ही स्वयं को नरक में ले जाने के लिए तैयार करनेवाली स्त्री की मजबूरी देखिए। जीवन में उजियाला लाने की कोशिश करनेवाला समाज ही अँधेरा होने की राह देखता है। स्त्री अपनी पीड़ा को मन-ही-मन दबाकर रखती है। उसकी इच्छा होती है खुलकर रोने की परंतु यह व्यवस्था उसके होठों पर झूठी मुस्कान लेकर जीने को मजबूर करती है। जहीर कुरेशी स्त्री के बालविवाह की प्रथा को यथार्थ रुप में चित्रित करते हुए स्त्री के दुःख एवं पीड़ा को वाणी देने का काम करते है। अधिक उम्रवाले पुरुष के साथ लड़कियों का विवाह करना एक समस्या हमारे सामने प्रस्तुत है उसका वर्णन जहीर की गज़लों में दिखाई देता है-

"उस सुहागिन की व्यथा आप भला क्या समझोगे
जिसके तपते हुए यौवन को मिला तन बुढ़ा।"८

जहीर कुरेशी ने नारी जीवन की विभिन्न समस्याएँ, शोषण, अन्याय - अत्याचार एवं परंपरा से हो रही दुर्दशा को चित्रित किया है। समाज में नारी पर अन्याय एवं अत्याचार करने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। दहेज प्रथा, शारीरिक-मानसिक शोषण, आर्थिक कमजोरी एवं मजबूरी, सती प्रथा आदि द्वारा स्त्री का शोषण हो रहा है। सती होकर जलायी जानेवाली औरत को आज जीवन भर शोषण, उपेक्षा, मजबूरी और समर्पण में स्त्री की मृत्यु हो रही है। उसका जीवंत रुप जहीर की गज़लों में देखिए-

"कल सती हो कर जली थी, आज पति के हाथ
बन गयी जीवित जलाने की प्रथा औरत।"९

अतःस्पष्ट हो जाता है कि जहीर कुरेशी ने स्त्री जीवन की विभिन्न समस्याएँ, विसंगतियाँ, मजबुरियाँ, उपेक्षा, शोषण, अन्याय, अत्याचार, घुटन, संत्रास, निराशा, दुःख एवं दर्द को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने नारी जीवन के समर्पण, त्याग एवं सेवाभाव को उजागर कर भारतीय समाज को स्त्री के वास्तविक रुप का दर्शन कराया है। जहीर कुरेशी स्त्री जीवन को सुलभ एवं मनुष्य जीवन को स्वस्थ बनाने की कामना करते हुए नजर आते है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. जहीर कुरेशी की चुनिंदा गज़लें- संपा. डॉ.मधु खराटे पृ.०५
२. वही, पृ.६९
३. वही, पृ.७३
४. वही, पृ.९१
५. वही, पृ.१०३
६. वही, पृ.१०५
७. वही, पृ.११०
८. वही, पृ.११७
९. वही, पृ.१५

❑❑❑



Scanned with CamScanner